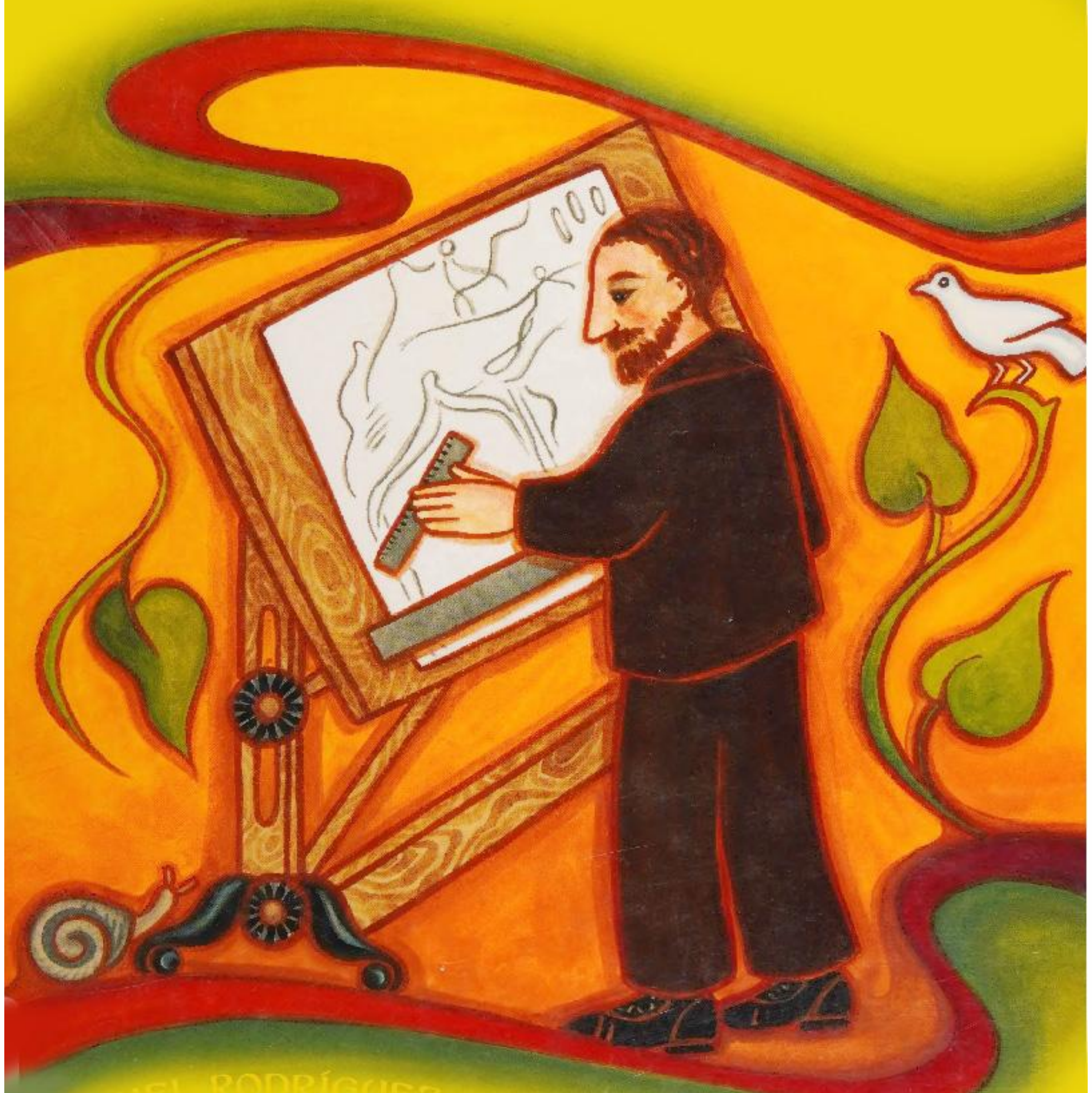
गढ़ना प्रकृति पर:
एन्टनी गाउदी का जीवन

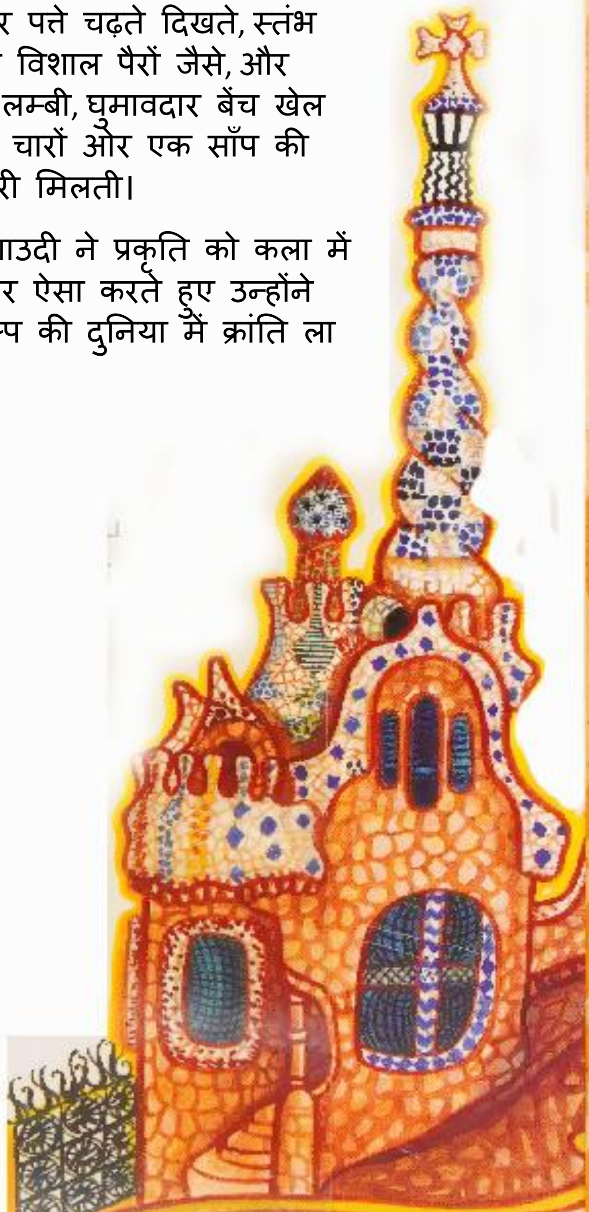


लेखनः रेचल रॉड्रीगस, चित्रः जूली पार्सकिस
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

स्पेन के एक छोटे से गाँव में एन्टनी गाउदी नाम का एक लड़का रहता था। वह कैटेलोनिया से था। उस इलाके से, जो ऊँचे पहाड़ों, रुपहले जैतून के पेड़ों और झिलमिलाते समुद्र का स्थान था। उस परिदृश्य का असाधारण सौन्दर्य गहरी छाप छोड़ता था। वह लड़का इस परिदृश्य को प्रकृति की विशाल पुस्तक समझता था, जिसे वह ताउम्र पढ़ते रहने वाला था।

गाउदी एक वास्तुकार बना। उसने वे सारे नियम सीखे जिनके अनुसार ढ़ाँचों और भवनों को बनाया जाता था। पर उसे तो प्रकृति के रंग और आकार प्ररित करते थे, सो उसने उन्हें ही अपने भवनों में शामिल किया। गाउदी के बनाए भवनों में दीवारों पर पत्ते चढ़ते दिखते, स्तंभ पशुओं के विशाल पैरों जैसे, और पार्क की लम्बी, घुमावदार बेंच खेल मैदान के चारों ओर एक साँप की तरह पसरी मिलती।

एन्टनी गाउदी ने प्रकृति को कला में बदला, और ऐसा करते हुए उन्होंने वास्तुशिल्प की दुनिया में क्रांति ला दी।





गढ़ना प्रकृति पर:
एन्टनी गाउदी का जीवन

लेखनः रेचल रॉड्रीगस, चित्रः जूली पार्सकिस
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा





पापी तथा दादी के लिए

- आर. आर.

रेचल शेड के लिए,

- जे. पी.

स्पेन के एक छोटे गाँव में एन्टनी गाउदी नाम का एक लड़का रहता था।

उसके लिए उसका इलाका कैटेलोनिया ही पूरी दुनिया थी। उसकी ऊँची चोटियाँ आसमान को बेधती थीं। रुपहले जैतून के पेड़ हवा में हिलोरे खाते थे। और नीला समुद्र झिलमिलाता था।





नन्हा गाउदी अक्सर बीमार रहता था।
उसकी हड्डियाँ और जोड़ दुखते थे।
वह हमेशा अपनी बहन और भाई के साथ
दौड़ और खेल नहीं सकता था।

पर गाउदी के पास चीज़ों पर ग़ौर करने का बहुत समय था।
वह अपनी फटी-फटी आँखों से दुनिया को देखता।
अपने चारों ओर उसे प्रकाश, आकाश और आकार दिखते।
प्रकृति उसे एक विशाल क़िताब-की नज़र आती थी।
वह इस क़िताब को ता-उम्र पढ़ने वाला था।









गाउदी के पिता ताम्बे और आग के साथ काम करते थे।

उसकी माँ का परिवार भी धातुओं का शिल्पी था।

वह बार-बार धातु के सपाट टुकड़ों को

ऐसे आकारों में बदलता देखता जो बीच से खोखले हों।



गाउदी की सेहत धीरे-धीरे सुधरी।

उसकी दो लड़कों से दोस्ती हुई।

तीनों ने साथ मिल कर एक प्राचीन मठ की छान-बीन की।

गाउदी ने उस खण्डहर की मरम्मत करने का सपना देखा।



हाई स्कूल पूरा करने के बाद गाउदी

वास्तुकार बनने बार्सेलोना गए।

वहाँ उसने महत्वपूर्ण स्मारकों का अध्ययन किया।

पुस्तकालयों में पढ़ाई की। अन्य वास्तुकारों ने उसे पढ़ाया।

गाउदी उन दिनों सुन्दर लम्बे टोप और कोट पहना करते थे।

वे ऑपेरा देखते और चर्च भी जाते।

उन्होंने अपनी मेज़ की डिज़ाइन खुद बनाई।

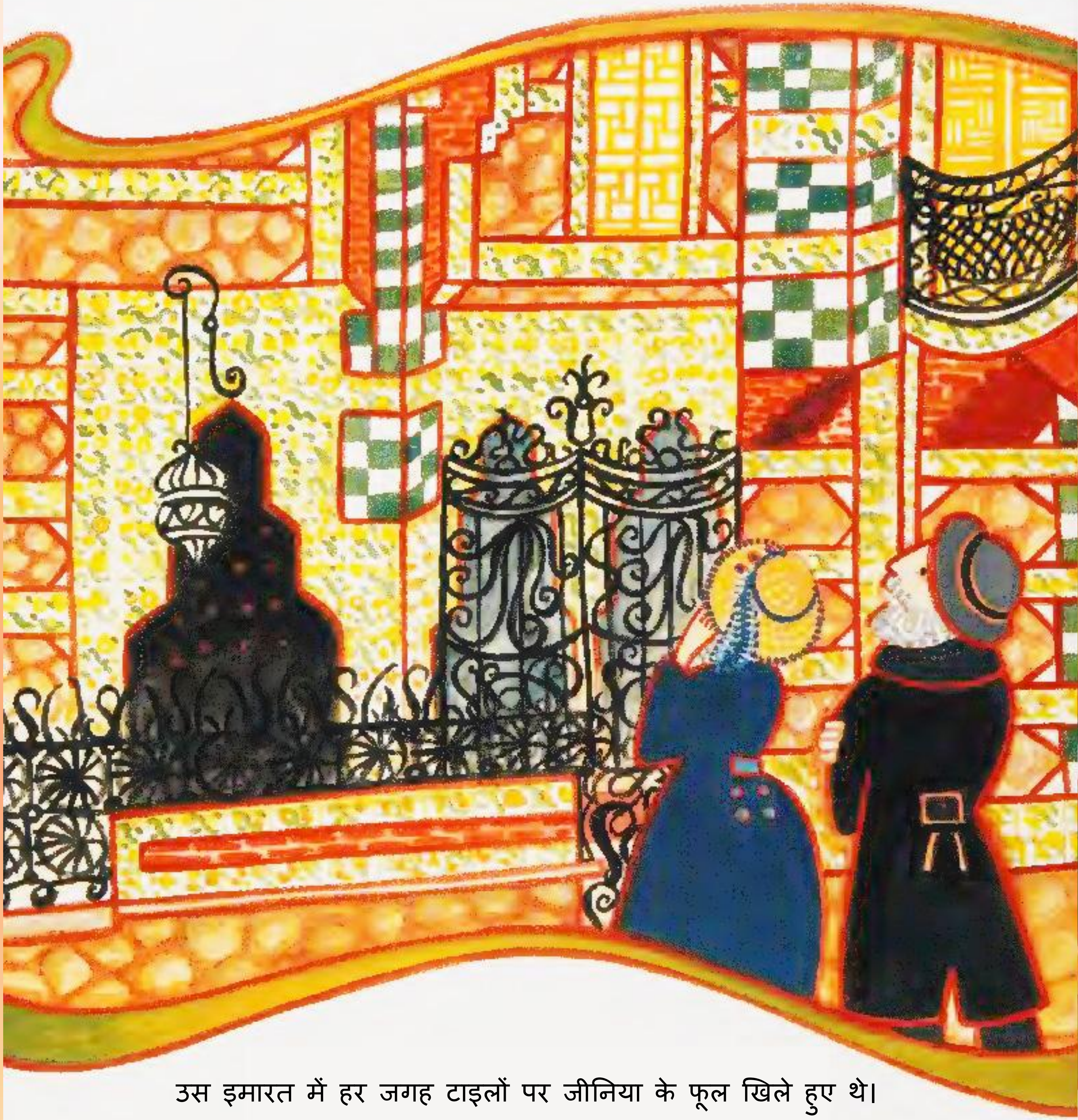
उन्होंने शहर के लिए लैम्पपोस्ट बनाए।



जल्द ही दूसरे लोगों ने गाउदी से कहा

कि वे उनके लिए भी निर्माण करें।

गाउदी की पहली बड़ी परियोजना वीसेन्स हाउस थी।



उस इमारत में हर जगह टाइलों पर जीनिया के फूल खिले हुए थे।

घर मानो रंगों की बिसात ही था।

घर के सामने से गुज़रने वाले ठिठक कर रुक जाते थे।

उन्हें गाउदी के चटक रंगों की आदत जो नहीं थी।

गाउदी प्रकृति को घर के अन्दर ले आए थे।



दीवारों पर पत्ते चढ़े दिखते,

ऊपर से चैरियाँ लटकती थीं।

पाखी चक्कर खा आसमान में उड़ जाते लगते।



गाउदी एक साथ कई परियोजनाओं पर काम करते।

उन्होंने होली फैमिली चर्च की डिज़ाइन बनानी शुरू की।

सालों तक उन्होंने उसका सपना देखा और तब जाकर उसे साकार रूप दिया।

उनकी आस्था ने उनके काम को प्रेरणा दी।

गाउदी के लिए निर्माण करना निहायत गंभीर मसला था।

उन्हें सब कुछ एकदम सटीक चाहिए होता था।

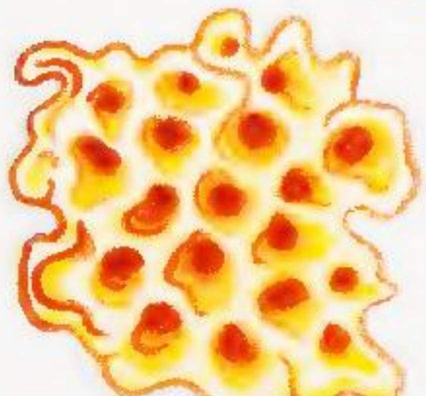
पर वे अपनी कल्पना का इस्तेमाल

करने से डरते नहीं थे।



हर बार जब मेहमान दरवाज़ा खटखटाते,
तो वे नीचे बने एक खटमल को कुचलते।

झांक कर बाहर देखने वाला छेद मधुमक्खी के छत्ते-सा नज़र आता।

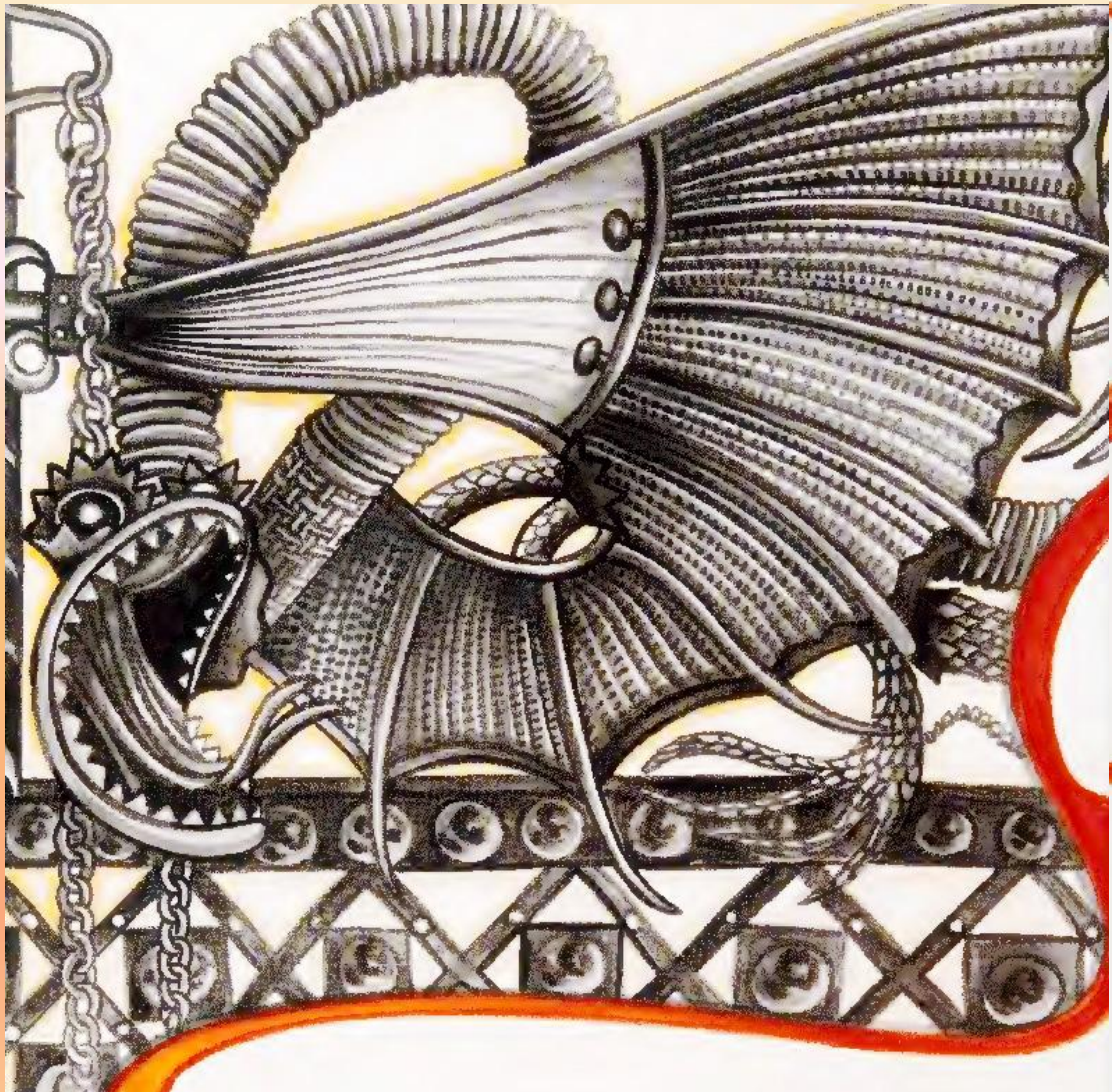


गाउदी लोगों को अपनी

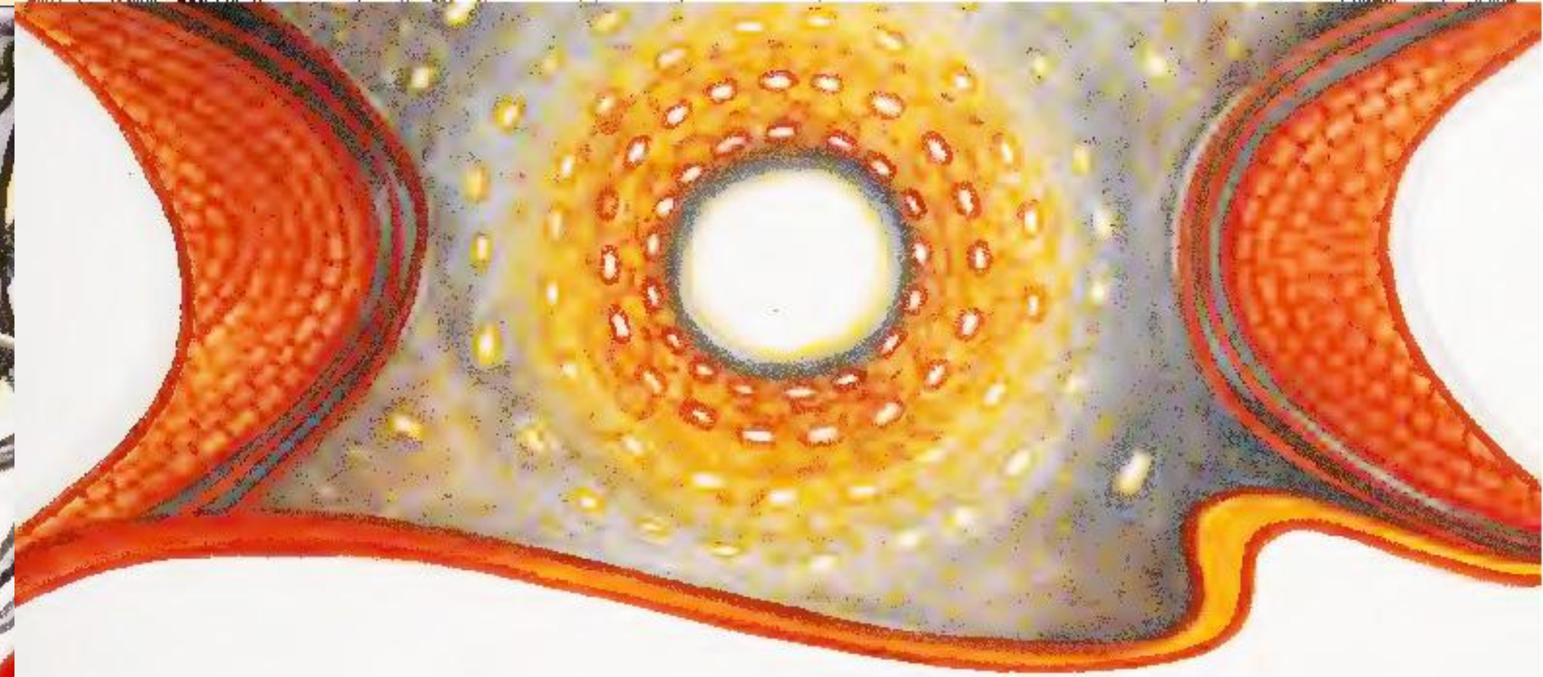
छोटी-से छोटी रचना तक को

ग़ौर से देखने पर मजबूर

करते थे।



उन्होंने अपने एक मित्र के लिए बाहरी दरवाज़े की डिज़ाइन बनाई।
यह उनके मित्र ग्वेल का गाँव का घर था।
ईंटों और चौकोर आकारों के ऊपर एक ड्रैगन बैठा था,
अपने नुकीले दाँत और लपलपाती जीभ दिखाता।
गाउदी की रचनाएं दिन-ब-दिन और साहसिक बनती गईं।



शहर में ग्वेल के घर के लिए गाउदी ने एक घुमावदार ढलान बनाया, जो तहख़ाने में बने तबेले तक जाता था। घोड़े उसी रास्ते से नीचे जाते थे। ऊपर एक गुम्बददार छत से सूरज की रोशनी आती थी। परिवार अपनी बैठक में तारों भरे आकाश का मज़ा ले सकता था।



आप एक भूमिगत छोटा गिरजा कैसे बना सकते हैं।

गाउदी ने इस समस्या का अध्ययन दस वर्षों तक किया।

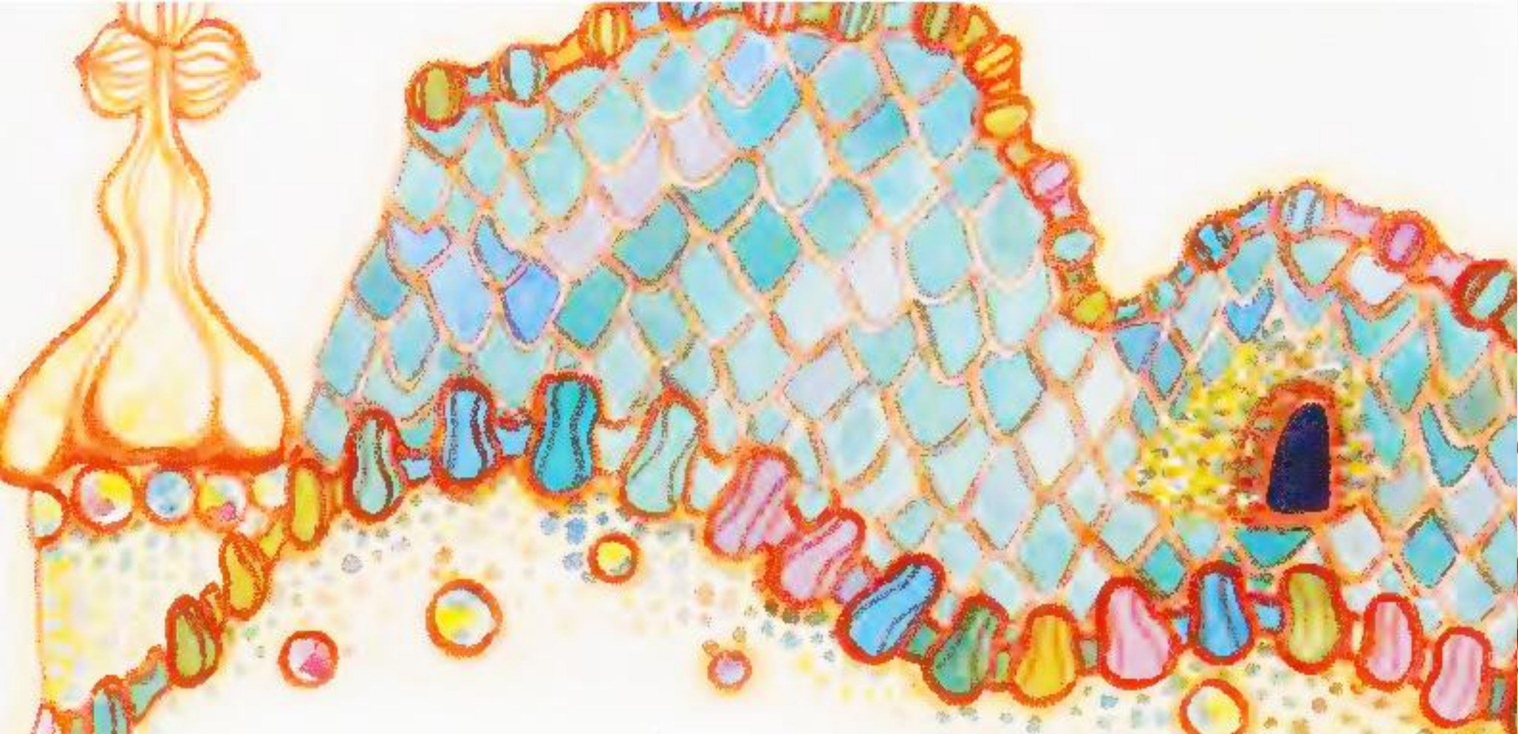
जब एक उल्टा मॉडल बनाया जो चमगादड़ों की बस्ती-सा था।





गाउदी ने यह सीखा कि मेहराबें और खंभे कैसे काम करते हैं।

तब उन्हें उलट कर कोलोनिया का मक़बरा बनाया।



कासा बटालो (बटालो भवन) में जो अलाव उन्होंनें बनाया,
वह एक कुकुरमुत्ते के आकार से ढका था।

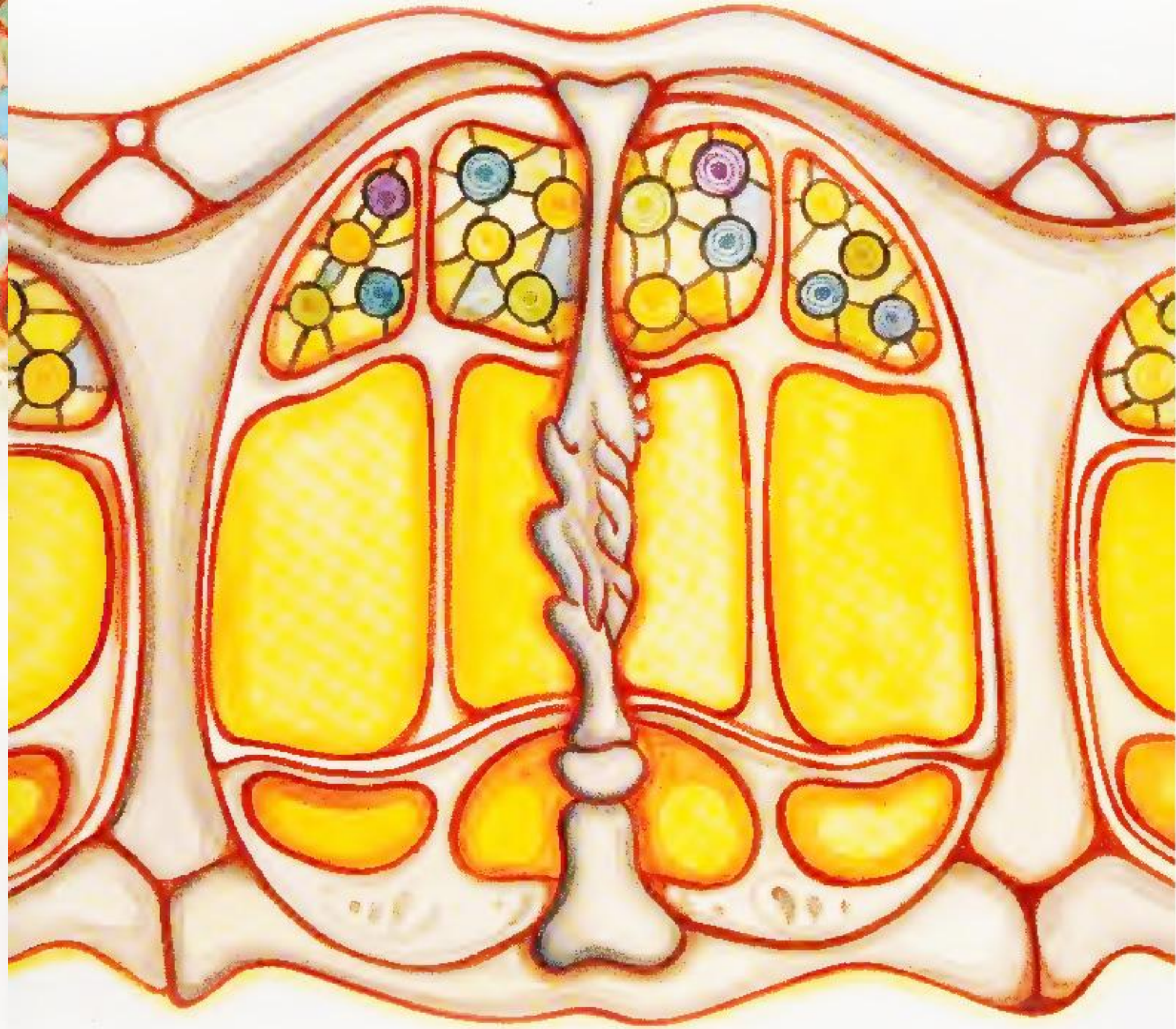
गलियारे ऐसे लगते थे मानों समन्दर की नीचे की गुफाएं हों।

और पूरा घर समन्दर-सा झिलमिलाता था।



छत पर बनी मेहराबें ड्रैगन की रीढ़-सी लगती थीं,

खम्भे पशुओं के विशाल पैर-से और छज्जे हड्डियों जैसे।



गोलाकार दीवारें चिकनी, साँप की चमड़ी जैसी,

और मीनार एक तलवार जैसी जो किसी पशु का वध कर रही हो।

गाउदी की कल्पना के मरोड़ों को देख लोग हक्के-बक्के रह जाते
ज़ाहिर है सबको उनके बनाए भवन पसन्द न आते थे।
पर गाउदी उनकी आलोचना पर कतई ध्यान नहीं देते थे।
वे केवल अपने मन की सुनते थे।





कासा मीला में लहरें उछलती-सी लगतीं।
गोलाकार कमरे किसी विशाल मधुमक्खी के छत्ते जैसे।
गाउदी प्रकृति को कला में बदल रहे थे।

वे छत की चिमनी को इस तरह सजाते
मानो वह सचल चमत्कारों की दुनिया हो।
छत का आकार जहाज़ सा लगता।
मेहमान अपने पैरों के नीचे समुद्र की लहरों को महसूस कर सकते थे।



कासा मीला को लेकर बवाल मचा।

कुछ लोगों को तो उससे घृणा तक हुई।

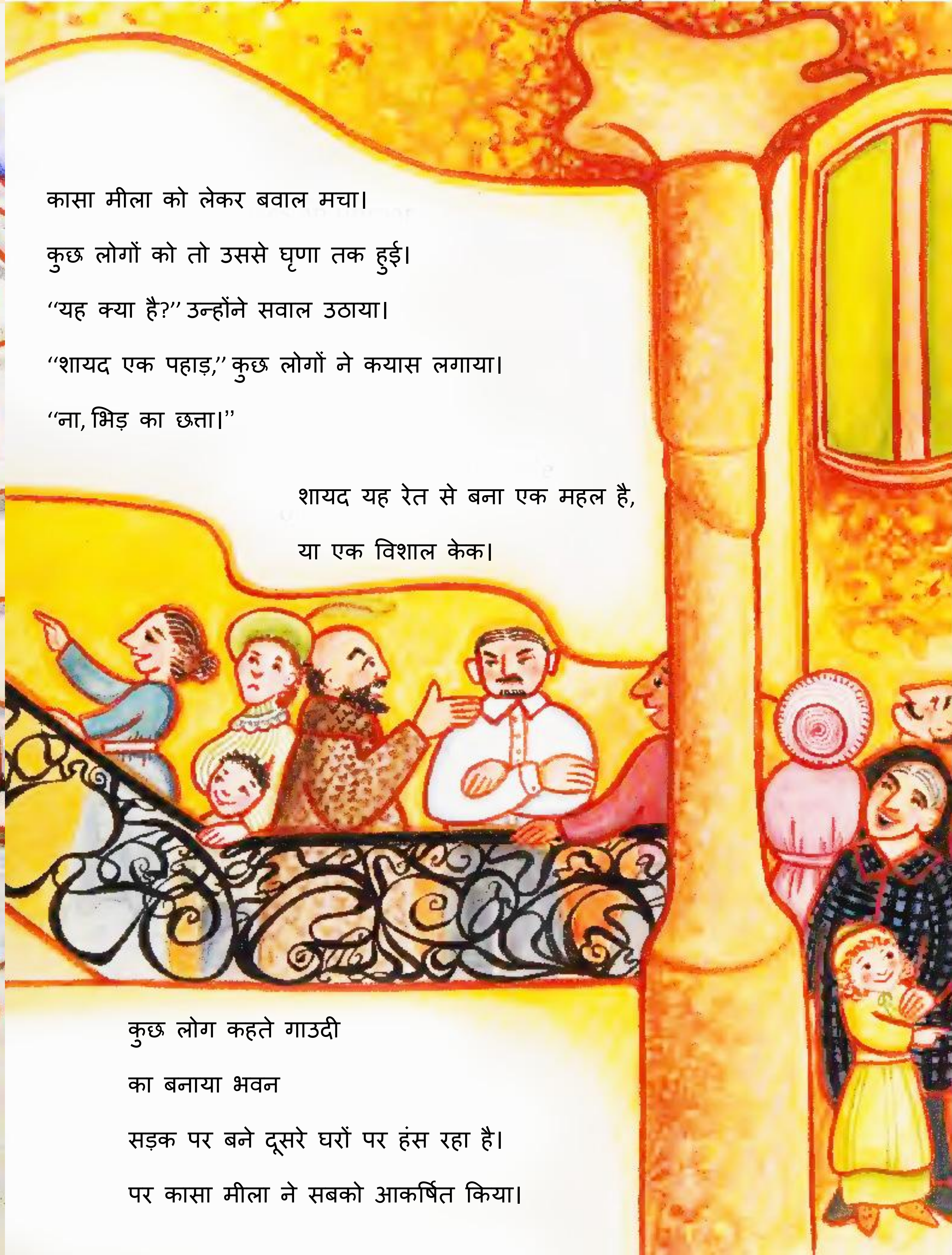
''यह क्या है?'' उन्होंने सवाल उठाया।

''शायद एक पहाड़,'' कुछ लोगों ने कयास लगाया।

''ना, भिड़ का छत्ता।''

शायद यह रेत से बना एक महल है,

या एक विशाल केक।



कुछ लोग कहते गाउदी

का बनाया भवन

सड़क पर बने दूसरे घरों पर हंस रहा है।

पर कासा मीला ने सबको आकर्षित किया।

पार्क ग्वेल, पहाड़ की तलहटी पर बना कल्पनालोक ही था।

चौकीदारों के कक्ष मानो स्वागत में हाथ हिलाते थे।

पच्चीकारी से बना गुहेरा चौकीदारी करता था।



खेल मैदान के चारों ओर बनी लकड़ी की बैंचें साँप की तरह मुड़ती-लहराती थी।

गउदी के कामगार पुरानी टाइलों, काँच से बने प्यालों

और तश्तरियों के टुकड़े-टुकड़े कर देते।

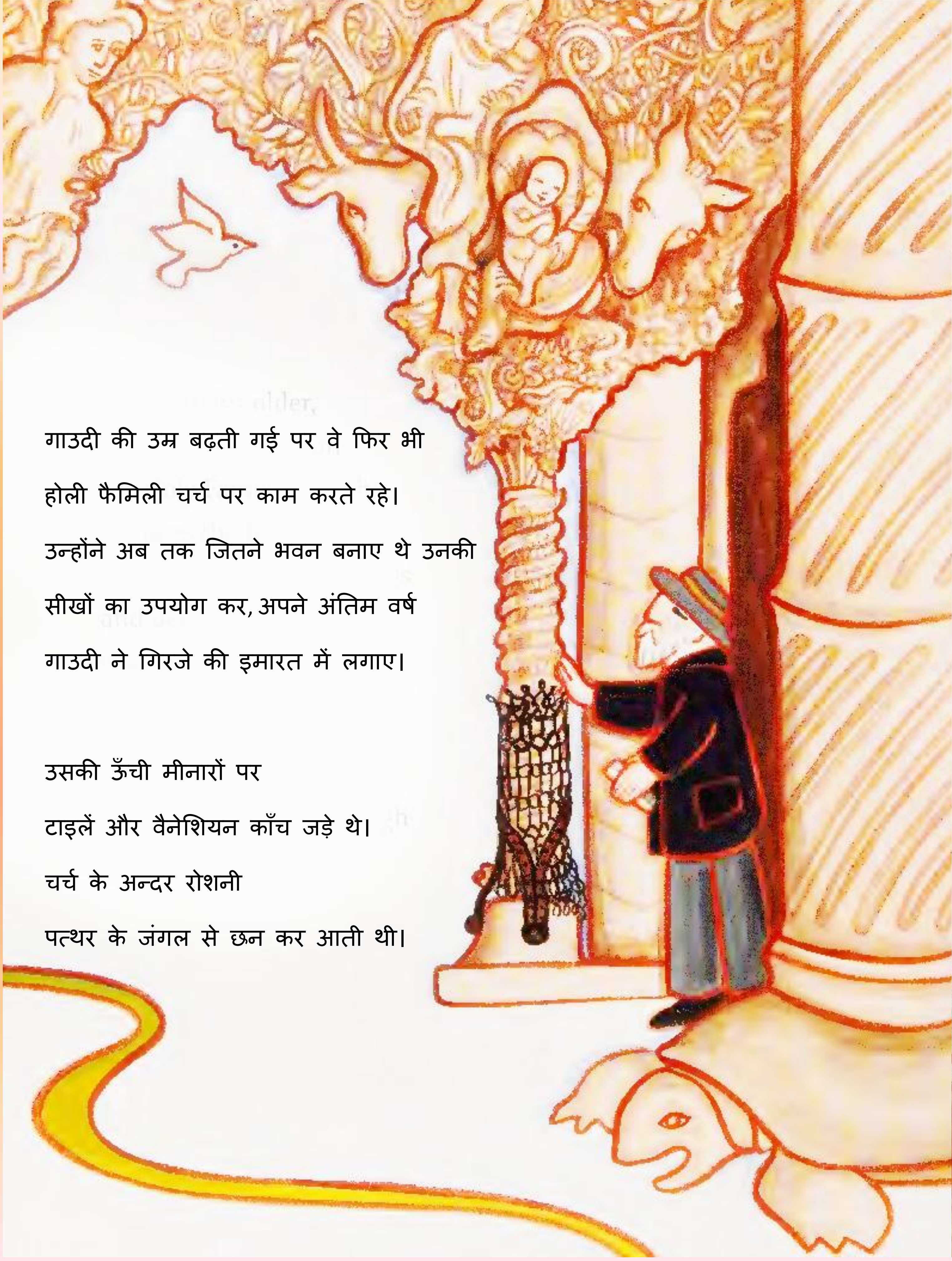
तब उनसे लहरदार बैंचों को सजाते।

गाउदी उनकी प्रतिभा की प्रशंसा करते।



सैलानी गाउदी की कैटेलोनिया की

इस परिकल्पना का उत्सव मनाने आते।



गाउदी की उम्र बढ़ती गई पर वे फिर भी होली फैमिली चर्च पर काम करते रहे। उन्होंने अब तक जितने भवन बनाए थे उनकी सीखों का उपयोग कर, अपने अंतिम वर्ष गाउदी ने गिरजे की इमारत में लगाए।

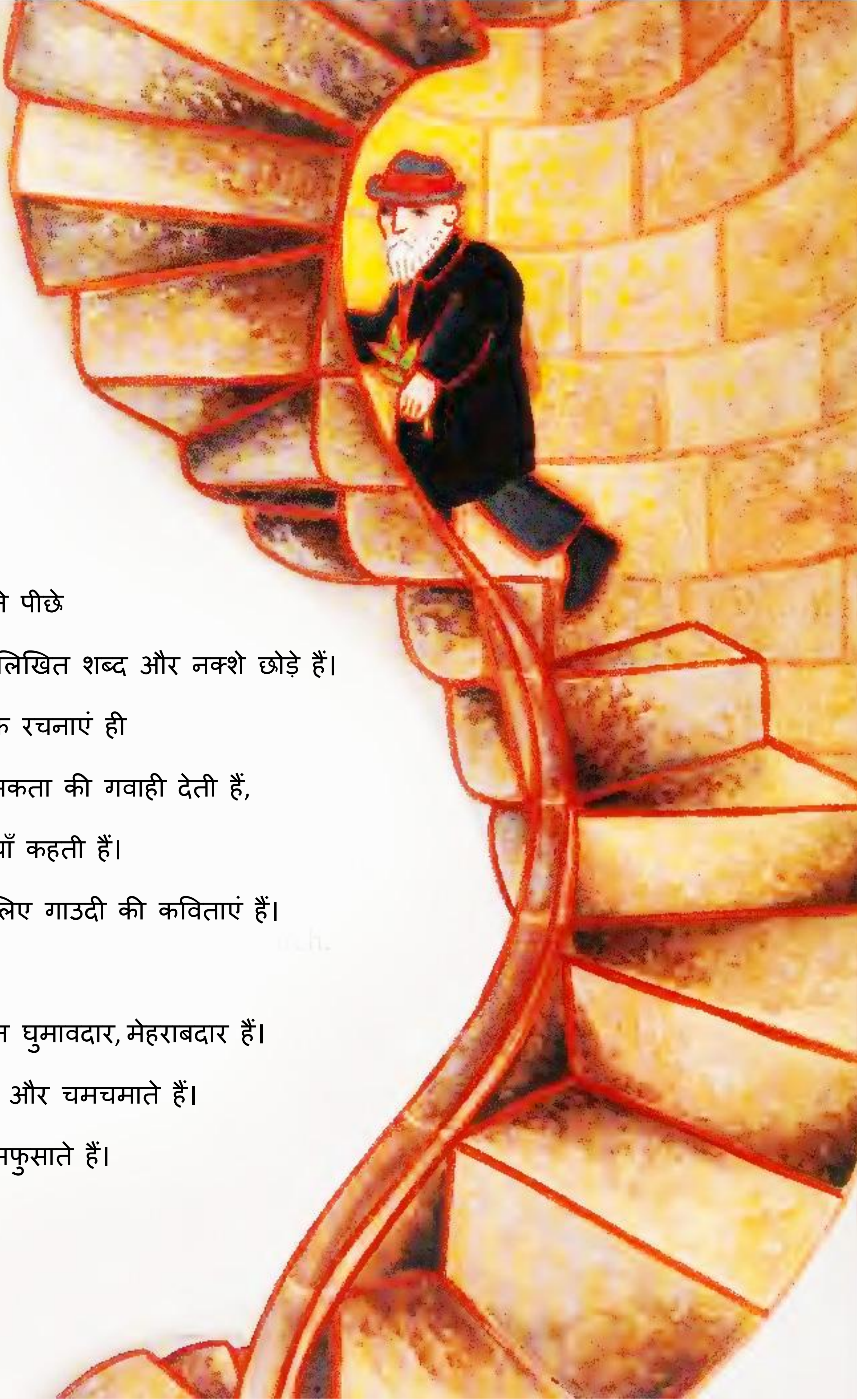
उसकी ऊँची मीनारों पर टाइलें और वैनेशियन काँच जड़े थे। चर्च के अन्दर रोशनी पत्थर के जंगल से छन कर आती थी।

गाउदी का गिरजाघर बार्सिलोना में एक सपने-सा झिलमिलाता था।



गाउदी ने अपने पीछे
बहुत ही कम लिखित शब्द और नक्शे छोड़े हैं।
उनकी साहसिक रचनाएं ही
उनकी रचनात्मकता की गवाही देती हैं,
उनकी कहानियाँ कहती हैं।
वे दुनिया के लिए गाउदी की कविताएं हैं।

गाउदी के भवन घुमावदार, मेहराबदार हैं।
वे झिलमिलाते और चमचमाते हैं।
वे खुशी से फुसफुसाते हैं।





वे इन्तज़ार कर रहे हैं कि
आप उन्हें अपनी आँखों से देखें।

लेखक की कलम से

एन्टनी गाउदी ई कॉरनेट का जन्म 25 जून 1852 में दक्षिणी कैटेलोनिया, स्पेन में हुआ था। वे तीन भाई-बहन में सबसे छोटे थे। गाउदी को बचपन में गठिया का रोग था। किशोरावस्था में उन्होंने कला तथा वास्तुकला में रुचि दिखाई। वे बार्सिलोना के कॉलेज में पढ़ने गए और प्रतिष्ठित वास्तुकारों के शागिर्द रह बहुत कुछ सीखा। बार्सिलोना के कई लोगों को अपनी विरासत पर फक्र है, और वे खुद को स्पेन के अन्य भागों से अलग और श्रेष्ठ मानते हैं। गाउदी भी इस गर्व को महसूस करते थे और इसलिए हर सप्ताहान्त में एक क्लब के साथ कैटेलोनिया के ऐतिहासिक स्थानों को देखने जाया करते थे।

गाउदी की आरंभिक परियोजनाओं ने गौथिक शैली की सीधी रेखाओं तथा पुष्टि करने वाली समरुपता को नकारा। उनका टाइलों का उपयोग, मेहराबों और मलबे का उपयोग तथा हरे-भरे चित्र म्यूदेहार शैली (मूर तथा ईसाई वास्तुशिल्प का मिश्रण) के प्रभाव का संकेत करते हैं। गाउदी ने आधुनिक शैली अपनाई थी जिसमें भंवर तथा घुमावदार रेखाएं थीं। उसे मॉडर्निज़म या आर्ट नोवू कहा जाता था। उसकी वक्र रेखाओं को देख फ्रांसीसी आलोचक ने उसे 'वर्मिसैली इन डेलिरियम' कहा था।

गाउदी अपने साथ काम करने वाले कामगारों का सम्मान करते थे। वे अपने समय से बहुत पहले चीज़ों का री-साइकिल करते थे। वे और उनके कामगार पुराने कपों, शराब की बोतलों और तश्तरियों को तोड़ते और उनका इस्तेमाल पच्चीकारी में करते थे। पार्क ग्वेल की बारीक पच्चीकारी उन्होंने इसी तरह की थी।

जैसे-जैसे उनकी ख्याति अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ी गाउदी को न्यू यॉर्क शहर के एक गगनचुम्बी होटल का स्कैच बनाने आमंत्रित किया गया। दुर्भाग्य से उनकी यह डिज़ाइन कभी साकार नहीं हो सकी। गाउदी के चौकाने वाले आधुनिक काम अक्सर विवाद पैदा करते थे। उनके साहसिक नवाचार और परिचित आकारों से हटने के कारण उनके काम के अर्थ पर बहस छिड़ जाती थी। 'ला सगरादा फामीलिया' (होली फैमिली) चर्च पर आज भी सवाल उठाए जाते हैं। उसके आकर्षण तथा उसे पूरा किया जाना चाहिए या नहीं पर चर्चाएं होती हैं।

1926 में चौहत्तर वर्ष की आयु में गाउदी को सगरादा फमीलिया के पास एक ट्राम ने टक्कर मार दी। कुछ ही दिनों बाद उनका देहान्त हो गया। हज़ारों लोग उनकी अंतिम यात्रा में शरीक हुए। वे अपने स्थानीय व प्रतिभाशाली पुत्र व हीरो को सम्मान देना चाहते थे, जिसने प्रकृति से तथा अपने कैथलिक धर्म से प्रेरणा ली और निर्माण की एक नई भाषा का सृजन किया था।

आज गाउदी की सात इमारतों को यूनेस्को द्वारा वैश्विक धरोहर घोषित किया गया है क्योंकि इन्होंने वास्तुशिल्प तथा निर्माण के क्षेत्र में रचनात्मक योगदान दिया था। ये हैं - कासा विसेन्स (1883-1888); पलासियो ग्वेल (1885-1890); कोलोनिया ग्वेल क्रिप्ट (1898-1916); कासा बतालो (1904-1906); कासा मीला (1906-1910); पार्क ग्वेल (1900-1914); तथा ला सरगादा फामीलिया नेटिविटी फसाड तथा क्रिप्ट (1883-1926)। इस किताब में गाउदी की जिन अन्य कृतियों का उल्लेख किया गया है, वे हैं प्लास रिआल बार्सिलोना, के लिए बनाए गए लैम्पपोस्ट (1878-1880); कासा काल्वेट य पिन्टो (1898-1900), यह वह दरवाज़ा खटखटाने का डोरनॉक था, जिसके नीचे खटमल बना था; पिन्का ग्वेल का ड्रैगन दरवाज़ा (1884-1887)।

कई लोगों के लिए गाउदी का काम बार्सिलोना के उदारवादी नज़रिए तथा रचनात्मक भाव का प्रतिनिधित्व करने के साथ कैटेलोनिया की संस्कृति तथा विरासत को लेकर गर्व के भाव का प्रतीक भी है। हर साल असंख्य सैलानी गाउदी की असीम कल्पना तथा साहसिक मौलिकता का सम्मान करने जाते हैं।